BJS
Bharatiya Jain Sangathan



श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

भारतीय जैन संगठन समाचार

फरवरी २०१५
अंक २

www.bjsindia.org

युवती सशक्तिकरण कार्यक्रम सिध्दीयों के नये सोपान पर 4

वैवाहिक रिश्ते तय करने की पारंपरिक प्रक्रिया मे बदलाव 3

आधुनिक परिवारों में बदलती लैंगिक भूमिकाएँ 5

बीजेएस समाचार 6

विवाह एवं परिवार

7

अल्पसंख्यक सूचनाएं एवं जानकारी

2 राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से


8
IGNITING BUSINESS DEVELOPMENT iBuD
युवा उद्यमी कार्यक्रम

4 अनुकरणीय


राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से ....



प्रिय स्वजन्,

नियमित प्रकाशन से सामयिक विचार, उपयोगी जानकारी आदि आप तक पहुँचाने व आपसे बातचीत के हमारे प्रयासों में "भा.जै.सं. समाचार " मासिक पत्रिका के द्वितीय अंक को इस विश्वास के साथ आपके हाथों में पहुंचा रहे हैं कि उस पथ के निर्माण का कार्य अब सहज होगा, जिस पर चल कर परस्पर संबंधों के विकास की नयी यात्रा का शुभारम्भ किया जा सके.

इस माह के अंक प्रकाशन में कुछ विलम्ब हुआ, जिससे यह सुअवसर प्राप्त हुआ कि पिछले लगातार तीन रविवारों से मुझे मिले अनुभव आप सभी के साथ बाँट सकूं. पिछले दो रविवार, इंदौर एवं नागपुर में आयोजित हुए विधवा-विधुर पुनर्विवाह परिचय सम्मेलन में सम्मिलित हुआ. भा.जै.सं. की इंदौर व नागपुर इकाईयों ने आयोजन को सफल बनाने हेतु अथक परिश्रम किये जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण बड़ी संख्या में पुनर्विवाह हेतु प्रतिभागियों का पंजीयन होना है. आयोजकों व कार्यकर्ताओं की निष्ठा व समर्पण को लेकर मैं तनिक भी संदिग्ध नहीं, किन्तु आयोजनों को सफल करार देने में दुविधा महसूस कर रहा हूँ क्योंकि इन प्रतिभागियों में कुछ ही दुर्भाग्यशाली थे जिन्होंने अपने जीवन साथी को असमय ही खो दिया. इनमें से कुछ ऐसे भी थे जिनके जीवनसाथी से जुदा होने के कारण वस्तुत: न सुलझने वाले कटु सत्य थे. किन्तु यह आयोजन मेरे लिए आश्चर्य मिश्रित दु:ख का कारण ही रहे क्योंकि मैं अधिकाँशत: उन प्रतिभागियों से साक्षात्कार कर रहा था जिन्होंने शायद अयोग्य तरीके से तलाक के निर्णय तक पहुँचने को योग्य माना.

समाज में उत्तरोतर बढ़ती संख्या में युगलों के जल्दबाजी में विवाह-विच्छेद के निर्णय पर पहुँचने के क्या कारण हो सकते हैं? अधिकांश ने जीवनसाथी की उनसे मानसिक, वैचारिक व विविध स्तरीय अनुकूलताओं (Compatibility) का विपरीत या प्रतिकूल होना बतलाया. दो स्पंदित आत्माओं के स्थाई मिलन के स्वप्न को साकार करने हेतु दोनों पात्रों की सम्पूर्ण अनुकूलताओं के मिलान का उत्तरदायित्व किसका? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो हमारे मन मस्तिष्क पर हथोड़े सा प्रहार कर रहे हैं. जिसका उत्तर हमें परिवार, समाज व युवा पीढ़ी के अस्तित्व को बचाए रखने हेतु खोजना ही होगा.

अनेक प्रतिभागियों ने परिवार के वरिष्ठजन् का अनुचित हस्तक्षेप बतलाया. अविवादित रूप से अभिभावकों के हस्तक्षेप का कारण उनके बच्चों की खुशहाली ही होता है किन्तु दुर्भाग्यवश यह पहलू विवाह-विच्छेद का कारण बन रहा है. हस्तक्षेप रहित स्वतंत्र व व्यक्तिवादी जीवनशैली की अपेक्षाओं से ग्रसित इस युवा पीढ़ी को निर्देशित करना कठिन अवश्य है किन्तु असंभव नहीं. इस हेतु आयोजनबद्ध तरीकों से रचनात्मक प्रयासो की आवश्यकता है.

एक हृदयस्पर्शी अनुभव जो इंदौर में हुआ, आपके साथ बांटना चाहता हूँ. एक सुन्दर लड़की से साक्षात्कार का अवसर मिला जो दुर्भाग्यवश समाज की नजर में विधवा है, किन्तु मेरे मतानुसार वह अत्यंत ही सौभाग्यशाली है. वह पुनर्विवाह कर सुखी जीवन व्यतीत करे ऐसा स्वप्न कोई और नहीं, उसके दिवंगत पति के माता-पिता स्वयं संजो रहे हैं, जिनके आशीर्वाद और प्रेरणा से वह इस सम्मेलन में प्रतिभागी बनकर आयी. पुत्र की आकस्मिक मृत्यु के दु:ख से उबरकर, पुत्र-वधू में ही पुत्र की छवि निहारते ये माता-पिता समाज में आदर्श उदाहरण तो प्रस्तुत कर ही रहे हैं साथ ही वे अनुकरणीय भी हैं. मैं हृदय के अंतरतल से उन्हें नमन करता हूँ. बेटी और बहू के बीच, भेद की यह रेखा हमारे मन-मस्तिष्क पर दिन-प्रतिदिन गहराती जा रही है, जो इन बच्चों के विवाह-विच्छेद का कारण बन रही है.

मित्रों! इस माह के प्रथम रविवार को अलग ही किन्तु सुखद अनुभव गुजरात के जामनगर में आयोजित सामुहिक विवाह में सम्मिलित होने पर हुआ. वहाँ इस कार्यक्रम की लोकप्रियता को देखकर अपार हर्ष हुआ क्योंकि यह कार्यक्रम हम सभी के प्रिय आदरणीय शांतीलालजी मुथ्था की सुदृढ़ सामाजिक वैचारिकी पर आधारित है, जिसमें उन्होंने दहेज, कन्या भेदभाव, भ्रूणहत्या, दुल्हन अपमृत्यु जैसी अनेक गंभीर समस्याओं का हल सैद्धान्तिक रूप से इसमे खोजा व समाज के समक्ष प्रस्तुत किया. बदलते सामाजिक परिवेश मे जहां नित नई पारिवारिक व वैवाहिक समस्याएँ जन्म ले रही हैं, प्राय:लुप्त हो रही सामुहिक विवाह की परंपरा आज भी समस्याओं के समाधान में उतनी ही कारगर है. इस परंपरा के महत्व को वर्तमान संदर्भो में समझते हुए इसे पुन: योग्य तरीकों से विस्तृत परिमाण मे पुर्नस्थापित करने की आवश्यकता है.

द्रुत गति से बदलते समय में, विवाह संबंधी विभिन्न समस्याओं से घिरा समाज, इसका भोग बन रही युवा पीढ़ी, सामाजिक असंतुलनों के चित्रित होते नित नए दृश्य आदि परिवार एवं समाज के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रहें हैं. इन मुद्दों की गंभीरता व दुष्परिणामों से समाजजन् को अवगत कराना नितांत आवश्यक है. मुझे विश्वास है कि विवाह एवं परिवार विषय पर प्रकाशित यह अंक सफल वैवाहिक सम्बन्धों व सुखी परिवार की यथार्थताओं पर तुषारापात कर रहे मुद्दों पर चिंतन के नए द्वार खोलेगा.

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष

वैवाहिक रिश्ते तय करने की पारंपरिक प्रक्रिया में बदलाव आवश्यक



आज का युवा स्वयं की बढ़ती अपेक्षाओं के दायरों को मुठ्ठी में कर लेने की स्पर्धा में लगा है. उच्चशिक्षा, तकनीकि प्रगति व आत्मनिर्भरता जैसे परिबलों के दम पर समस्त युवा वर्ग व्यक्तिवादिता से ग्रसित होता जा रहा है. सदियों से प्रस्थापित पारिवारिक प्रबंधन प्रणाली, भारतीय संस्कृति की परिचायक ही नहीं रही अपितु परिवार के सदस्यों के मध्य भावनात्मक एकता व सामंजस्य को सुदृढ़ता प्रदान करती रही है. किन्तु बदलते सामाजिक परिवेश में पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों का ह्रास, परिवार एवं समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है. परिवार के सदस्यों के मध्य घटती भावनात्मक संवेदनशीलता के कारण पति एवं पत्नि के संबंधों में विवाद के अतिरिक्त तलाक का प्रचलन भी बढ़ता जा रहा है. यही नहीं, अब विवाह जिसे भारतीय संस्कृति में संस्था के साथ संस्कार के रूप में भी मान्यता प्राप्त है, स्थापित करने में परिवारजन् को अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है.

३० वर्षों से अथक एवं अविरत सामाजिक अनुसंधान में रत व परिवार तथा विवाह विषय के विशेषज्ञ, भा.जै.सं. के संस्थापक शांतिलालजी मुथ्था ने ४ वर्ष पूर्व घोषणा की थी कि वर्ष २०२५ के आगमन तक प्रत्येक दो विवाहों में से एक की परिणति तलाक में होगी. गत २ दशकों में द्रुतगति से बदली सामाजिक परिस्थितियों में बढ़ते तलाक की दर के हम सभी साक्षी हैं. वे सामुहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलनों के प्रणेता, पारिवारिक एवं वैवाहिक मसलों के परामर्श आदि में दक्ष हैं व उन्होंने यह अनुभव किया कि परिवारजन् द्वारा विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के संबंध तय करने की पारंपारिक पद्धति अब कारगर नही है तथा यह बढ़ते तलाकों का मुख्य कारण भी है. उन्होंने समाजजन् के समक्ष वैवाहिक संबंध तय करने की समयोचित पद्धति प्रस्तुत की है.

गत कुछ सदियों पर दृष्टी करें तो पाते हैं कि हम पुरातन मान्यताओं एवं परंपराओं से बंधे रहना चाहते हैं. वैवाहिक संबंध तय करने में भी प्रचलित पद्धतियों पर ही आधार रख रहे हैं जिसमें रिश्तेदारों, मित्रों व परिचितों से योग्य पात्र के सलाह सूचन की अपेक्षाएं की जाती हैं. किन्तु यह अब वास्तविकता है कि योग्य पात्र के सुझाव में रिश्तेदारों व मित्रों से अपेक्षाएं रखना न तो व्यावहारिक ही है और न ही तर्क संगत. अभिभावकों को स्वयं के मापदंडों व विचारधाराओं के तहत सीमित स्रोतों से मिले संबंध प्रस्तावों पर निर्णय लेने की पद्धति अब उपयुक्त नही रही है क्योंकि पुत्र-पुत्रियों की इस विषय में सोच, आवश्यकताएं व उनकी आदर्शपात्र की कल्पनाओं को ध्यान में लेना आवश्यक है, जिसे पारंपारिक प्रणाली में योग्य स्थान ही नही है. सामान्यतौर पर पात्रों की विचारधाराओं, मान्यताओं व पसंद-नापसंद तथा उनकी क्षमताओं को संदर्भित ही नहीं किया जाता. बेटियों का वैवाहिक संबंध तय करने की प्रक्रिया में लड़के के परिवार के समक्ष उनकी प्रदर्शनीय प्रस्तुति आधुनिक समाज में अवांछनीय तो है ही साथ ही में बेटी हेतु मानसिक वज्रपात से कम नही है. हम अब भी पुरानी विचारधाराओं से बंधे हैं जिसमें लड़के के परिवार द्वारा वैवाहिक संबंध हेतु पहल नहीं की जाती है, जिसकी वजह से योग्य समय पर रिश्ते तय करने में विलंब होता रहता है.

अभिभावकों द्वारा सामने वाले पक्ष की पारिवारिक पृष्ठभूमि, सम्पन्नता, व्यवसाय, समाज में रुतबा व तद्उपरांत पात्र की शिक्षा अग्रिमता में रहती है. जबकि सामने वाले पात्र की वैचारिक, मानसिक व अन्य अनुकूलताएं युवा वर्ग की प्राथमिकता में रहती हैं. दूसरी ओर उच्चशिक्षित बेटी के परिवारजन् के मापदंड अब मात्र उच्चशिक्षित सुयोग्य पात्र तक ही सीमित नहीं रहे अपितु स्वतंत्र व्यवसाय व स्वतंत्र जीवनशैली भी उनमें जुड़ चुके हैं. वैवाहिक संबंध तय करने की प्रक्रिया में लड़के या लड़की की पारिवारिक दबाव के अधीन स्वीकृति प्राप्त करना महज औपचारिकता रह गई है.

तीव्र गति से बदलते सामाजिक परिवेश में, समय व मांग की नज़ाकत को समझे बिना, वैवाहिक संबंध तय करने की प्रक्रिया में परिवारजन् द्वारा पारंपरिक पद्धति पर अडिग रहने का ही परिणाम है कि रिश्तों हेतु प्रस्ताव मिलने व उन पर योग्य निर्णय लेने में परेशानियां बढ़ रही है फलस्वरूप विवाह योग्य लड़के-लड़कियों की औसतन उम्र बढ़ती जा रही है, जिससे सामाजिक असंतुलन की स्थिति का निर्माण हो रहा है.

परिवर्तनशील समय के साथ तालमेल हेतु परिवार के वरिष्ठजन् की भूमिकाओं में समझ व उत्तरदायी वैचारिक प्रचुरता की आवश्यकता है. जहां एक ओर लड़के-लड़कियों को स्वयं के स्रोतों से योग्य पात्र खोज कर, कुछ विकल्प परिवारजन् के समक्ष प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए वहीं अभिभावकों को चाहिए, कि उनके पुत्र-पुत्रियों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों पर वे लक्ष्य तो करें ही तथा इस संबंध में उन्हें पूर्ण विश्वास में भी रखें. परिवारजन् द्वारा यह स्वतंत्रता देने से पूर्व उन्हें स्वयं के स्रोत से योग्य पात्र की खोज हेतु आवश्यक निर्देश व सीमाएं समय समय पर उल्लेखित करते रहना ही हितकर होगा.

अब समय है की युवा वर्ग स्वयं हेतु विवाह योग्य पात्र के चयन में मानसिक व वैचारिक अनुकूलताओं के अतिरिक्त पारिवारिक पृष्ठभूमि, जाति, शिक्षा व केरियर जैसे मुद्दों को ध्यान में रखें. इस पद्धति से प्रेमविवाहों को बड़ी सीमा तक टाला जा सकेगा. इस पद्धति में अंततः परिवार के वरिष्ठजन् द्वारा प्राप्त प्रस्तावों पर योग्य निर्णय सर्वसहमति से लिया जाना ही श्रेयकर होगा. परिवारजन् द्वारा अपनाई जाने वाली इस पद्धति की सूचना व निर्देश समय-समय पर पुत्र-पुत्रियों को सामान्य पारिवारिक चर्चा के माध्यम से दिये जाने चाहिए. इस से प्रेमविवाहों की मात्रा तो निश्चित तौर पर घटेगी ही, साथ ही तलाक की बढ़ती समस्या की रोकथाम में यह कारगर शस्त्र साबित होगा.

नवंबर,२०१४ में पुणे में आयोजित भा.जै.सं. के राष्ट्रीय महाअधिवेशन में उपस्थित ९६.४% महानुभावों ने आ. मुथ्थाजी द्वारा प्रस्तुत इस विचारधारा को स्वीकृति प्रदान की थी. आज इस विचारधारा को जन्-जन् तक पहुंचाने की आवश्यकता है. भा.जै.सं. द्वारा विशेष वक्ताओं के माध्यम से 'वैवाहिक संबंध तय करने की पारिवारिक उत्तरदायी भूमिकाओं में परस्पर बदलाव' विषय पर व्याख्यान आयोजित करने की योजना है. सामयिक पत्रों व समाचार पत्रों के माध्यम से इस विचारधारा को जन्-जन् तक पहुंचाने का भागीरथ कार्य किया जा रहा है. अनिवार्यतः हमें हमारे परिवारों में संबंधों की संवेदनशीलता, गरिमा तथा एकता को स्थायित्व प्रदान कर समाज के विघटन को रोकने हेतु आगे आना चाहिए, तभी हम मुथ्थाजी की समाज उत्थान की विचारधाराओं को सार्थक कर सकेंगे.

युवती सशक्तिकरण कार्यक्रम - सिद्धियों के सौपान पर



कर्नाटक राज्य शिक्षा विभाग के साथ करार

गत माह गौंडवाना विश्वविद्यालय से करार पर हस्ताक्षर के पश्चात भा.जै.सं. की कर्नाटक राज्य इकाई की पहल पर मैसूर रीजन की ५५० शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यो के समक्ष राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र लुंकड़ ने युवती सशक्तिकरण कार्यक्रम की आज के समय में आवश्यक्ता व पाठ्यक्रम में समाहित बिंदुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला.

कार्यक्रम का उद्घाटन उपआयुक्त मैसुर जिला श्रीमती सी.शिखा के करकमलों से हुआ. उद्घाटन उद्बोधन में युवती सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने भा.जै.सं. व कर्नाटक राज्य शिक्षा विभाग को बधाई दी तथा बालिकाओं को प्रशिक्षित कर उनके व्यक्तित्व व भविष्य निर्माण में शिक्षकों की महती भूमिका पर विचार व्यक्त किये.

कार्यक्रम में श्री रूपराज चंदन, उपनिर्देशक महाविद्यालयीन शिक्षण व अनेक वरिष्ट राज्य सरकारी अधिकारी उपस्थित रहे. भा.जै.सं. के कर्नाटक राज्य अध्यक्ष श्री गौतम बाफना, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल, श्री प्रकाश गोलेछा एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे.

EOG मुंबई पहुँचा

family friends media marriage

६ फरवरी २०१५ को मुंबई के MD Shah Mahila Collage of Arts & Science मलाड़ एवं Dr. BMN Collage of Home Science माटुंगा में भा.जै.सं. के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने बड़ी संख्या में उपस्थित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के समक्ष युवती सशक्तिकरण की आवश्यकता व इस संबंध में भा.जै.सं. द्वारा तैयार किये गये पाठ्यक्रम के विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की. इन दोनों महाविद्यालयों से युवती सशक्तिकरण कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु MOU पर हस्ताक्षर किये गये, जिनके तहत इन महाविद्यालयों की १०,००० विद्यार्थियों को सशक्त किया जायेगा.





प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का श्रृंखलाबद्ध आयोजन

युवती सशक्तिकरण प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएं दि. १४ से १७ फरवरी को मैसूर तथा हसन (कर्नाटक) में उप निदेशक, महाविद्यालयीन शिक्षण, मैसूर के सहयोग से आयोजित हुई जिसमें क्रमश: २१ व २५ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया. प्रशिक्षण श्री राजेंद्र लुंकड़, इरोड़ व श्रीमती अमिता जैन, उज्जैन ने दिया. १८ से २१ फरवरी तक चंद्रपूर (महाराष्ट्र) में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में गोंडवाना विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के १०६ प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण में भाग लिया. प्रशिक्षण श्री. संजय सिंघी एवं श्री दिलीप चोपड़ा ने दिया.

मैसूर में कार्यशाला का उद्घाटन सांसद श्री वासू व हसन में श्री रूपराज चन्दन ने किया. चंद्रपूर मे उद्घाटन समारोह में केंद्रीय मंत्री श्री हंसराज अहीर व वाईस चांसलर डॉ. कीर्तिवर्धन दीक्षित उपस्थित रहे.

नयी राह दान की १०% राशि जीवदया व शेष राशि शिक्षा तथा मेडिकल हेतु

स्वागत समारोह एवं स्नेह भोज के रु. ११.३१ लाख दान कर नयी राह दिखाई.

विसनगर (गुजरात) के एक चार्टर्ड एकाउंटेंट युवक ने विवाह उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले स्वागत समारोह में खर्च होने वाली राशि के एवज में रू. ११,३१,१११/- दान में देकर समाजजन् के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया. परिवारजन् की सहमति से लिए गए निर्णय में दान की १०% राशि जीवदया व शेष राशि शिक्षा तथा मेडिकल सहायता में देना निश्चित किया गया.

विसनगर (गुजरात) के निवासी चार्टर्ड एकाउंटेंट विरल शाह नामक इस युवक का विवाह अनीषा के साथ हुआ. सादगी से विवाह विधि सम्पन्न करवा कर, इस बात की चिंता न करते हुए की समाज क्या कहेगा, स्वागत समारोह में होने वाले अंदाजित खर्च की राशि रू.११,३१,१११/- दान में देने का निर्णय कर समाज को नयी राह बतलाई.

दान देनेवाले जैन परिवार में ४ सदस्य चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं.

दानदाता परिवार के नवविवाहित युगल विरल एवं अनीषा, पिता विरेन्द्र शाह व बड़े भाई सहित ४ सदस्य चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं. समृद्ध परिवार होने के उपरांत भी अंधानुकरण न कर स्वागत समारोह एवं स्नेह भोज में खर्च होने वाली राशि दान देने के निर्णय में नवविवाहित युगल ने भी सहर्ष स्वीकृती दी.

अनावश्यक खर्चों से बचने हेतु नयी परम्परा जरूरी

चार्टर्ड एकाउंटेंट विरेन्द्र शाह (जैन) ने कहा कि, "मैने भी सादगी से विवाह किया था. मेरे पुत्र के विवाहोत्सव की तैयारियों के समय परिवारजन् के समक्ष स्वागत समारोह न कर खर्च की राशि दान में देने का प्रस्ताव रखा जिसे स्वीकृति प्राप्त हुई. अनावश्यक खर्च व प्रसिद्धि पाने की लालसा के विरुद्ध किसी को आगे आना ही चाहिए, यह सोचकर नयी प्रणाली प्रारंभ की है".

प्रणाली है कि समाज में खाया है तो खिलाना भी पड़ेगा

वर्तमान में विवाह समारोह बड़े पार्टी प्लॉट में अतिभव्य स्वागत भोज आयोजित कर अनावश्यक खर्च करने का प्रचलन बढ़ रहा है. यदि पुछे कि इतना खर्च क्यों तो जवाब मिलता है 'खाया है तो खिलाना भी पड़ेगा' अन्यथा समाज की टीका-टिप्पणी सहनी पड़ेगी. इस जैन परिवार ने इस गैरमान्यता को दूर करने का प्रयास किया है.

अनुकरणीय

गुजराती दिव्य भास्कर, अहमदाबाद में प्रकाशित समाचार का हिन्दी अनुवाद

आधुनिक परिवारों में बदलती लैंगिक भूमिकाएँ

शहरों-गॉवों की सड़कों पर युवतियों का मोटर बाईक या बड़े वाहन चलाना तथा हवाई जहाज उड़ाना आदि अब कुछ भी असामान्य नहीं रहा. दूसरी ओर फिल्मों या टी.वी. सीरियलों में अश्रुभरे नयनों के साथ नायक की भूमिका आज भी चित्रांकित हो रही है. द्रुतगति से आ रहे परिवर्तनों के कारण देश के सामाजिक व सांस्कृतिक तानों-बानों पर उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण का अकल्पनीय प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है, फलस्वरूव मानव सभ्यता के उद्गम से लेकर गत सदियों तक स्त्री-पुरूषों हेतु स्थायी रूप से प्रस्थापित व सर्वमान्य भूमिकाओं में परस्पर बदलाव, अब आश्चर्य का कारण नहीं रहा.

आदिकाल से ही चारित्रिक विशेषताओं, जटिलता सभर मान्यताओं व आचरणों आदि के आधार पर ही संस्कृतियों के माध्यम से लैंगिक भूमिकाएँ निर्धारित होती रही हैं. जैविकीय व कानूनी अस्मिताओं से भी अधिक, स्त्री-पुरूषों की वैचारिकी एवं कृत्य सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित व फलीभूत होते रहे हैं. अनुभूतियों व अभिव्यक्तियों के दायरों में, लैंगिक भूमिकाएं वेशभूषा, बाह्य व्यक्तित्व व व्यवहार आदि से निर्देशित होती रही हैं. ये वो पहलू हैं जिन्हें हम बाल्यकाल से देखते व सीखते हैं. अंतत: इनसे ही हमारी लैंगिक भूमिकाओं के मनोविज्ञान का निर्धारण होता है.



समाज में प्रयुक्त भाषा या शब्द लैंगिकता को वर्गीकृत तो करते ही हैं, साथ ही में मनुष्य की वैचारिकी, वाणी एवं वर्तन को भी निर्धारित करते हैं. उदाहरण स्वरूप स्त्रीलिंग हेतु प्रचलित शब्दों में भावनात्मक, आश्रित, संवेदनशील, शांत, आर्कषक, दुर्बल, सौम्य, सहनशील व पोषण करने वाली आदि. पुरूष हेतु आत्मनिर्भर, गंभीर, आक्रामक, बलशाली, कठोर, अक्खड़ आदि. किन्तु यह भी निर्विवादित सत्य है कि लगभग सभी पुरूषों में स्त्रियों की व स्त्रियों में पुरूषों की विशेषताएँ विद्यमान होती हैं. यह भी वास्तविकता ही है कि स्त्री-पुरूषों में भिन्नता की अपेक्षा समानताएं अधिक दृष्टिगोचर होती हैं. किन्तु भाषा, शब्दों व सांस्कृतिक आधार पर ही स्त्री व पुरूषों में भेद व लैंगिक भूमिकाएं वर्गीकृत होती रही हैं.



बचपन से ही माता-पिता, परिवारजन्, धर्म व संस्कृति तथा साथ ही में बाह्य दुनियाँ, टेलीविजन, पुस्तक- पत्रिकाओं व प्रसारण माध्यमों से लैंगिक भूमिकाओं के पाठ पढ़ने व समझने मिलते रहे हैं. किन्तु बदले परिवेश में, लड़के व लड़कियां जिन्हें आधुनिक व उच्च शिक्षा का वरदान प्राप्त है, प्रसारण माध्यमों के एक्सपोजर से स्वयं की विशिष्ट छवि अंकित करते हुए लैंगिक भूमिकाओं को पारंपरिक व सांस्कृतिक प्रभावों की सीमाओं से परे ले जाने में सफल हुए हैं. इतना ही नहीं इस संबंध में उन्होंने नए सीमा चिन्ह स्थापित किये हैं जिससे पारंपरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आदिकाल से संदर्भित लैंगिक अस्मिता अब अवास्तविक लगने लगी है. अब पुरूष वर्ग जहां भावनाओं की अभिव्यक्ति में पर्याप्त प्रतीत होता है वहीं महिला वर्ग भाषा, व्यवहार व केरिअर पसंदगी के क्षेत्र में उग्रता की ओर अग्रसर है.

युवाओं, नवदंपत्तियों एवं परिवार के नन्हें-मुन्नों में अंकित व्यक्तित्व की विशेष छाप, बाह्य आकृति, घरेलू व्यवहार, कामकाज आदि सभी में अकल्पनीय परिवर्तन आया है जिसमें आडंबर रहित अभिव्यक्तियों व भावनाओं के प्रत्यक्ष व्यवहार को अन्तर्मन से स्वीकृति प्राप्त हो रही है. पारिवारिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन, जिसमें पुरूष वर्ग द्वारा अब उनकी कामकाजी पत्नियों को घर वापसी पर पानी का ग्लास पेश करना, प्रात: रसोईघर में सहायता करना या चाय बनाकर देना अथवा नवजात शिशुओं की देखभाल आदि को सहजता से लिया जा रहा है. ख्याति प्राप्त लेखक श्री चेतन भगत की लेखन में अद्वितीय सफलताओं के साथ साथ उनकी गृहकार्य दक्षता ने उन्हें अधिक लोकप्रिय बनाया है. आज वे युवा जिनकी माताएँ कामकाजी हैं, सहजता से घर के उत्तरदायित्वों एवं कार्यो को स्वीकार कर रहें हैं जो कभी लैंगिक आधार पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षत: निषेधक माने जाते रहे हैं. अब हम पुरूषों को नर्स या महिलाओं को पोस्टमेन, प्लम्बर, पॉइलट आदि विविध भूमिकाओं में देख रहे हैं. अब तक महिलाएं कुश्ती, बॉक्सिंग व पुरूषों के अधिपत्य में रहे खेलों में उत्कर्ष प्रदर्शन कर रही हैं. बदलते सामाजिक समीकरणों में अब गृहकार्य का उत्तरदायित्व लैंगिक आधार पर आधारित नहीं रहा है.

बदलते परिवेश में, परिवारजन् व विशेषकर वरिष्ठ पीढ़ी पारिवारिक पात्रों की नवीन एवं स्वतंत्र उत्तरदायित्व लैंगिक भूमिकाओं को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकताओं को समझने में पिछड़ते जा रहे हैं क्योंकि या तो वे पुरातन लैंगिक भूमिकाओं की वैचारिकी से प्रभावित एवं ग्रसित हैं या फिर इन मुद्दों को समझने में थाप खा रहे हैं. दूसरी और महिला व पुरूष वर्ग से अब लैंगिक आधार पर अपेक्षायें रखना भी विवादों, पारिवारिक अशांति एवं तकरारों का कारण बन रहा है. परिवार का बाल वर्ग, विवादों के माहौल में लैंगिक भूमिकाओं को लेकर अत्यंत ही भ्रमित रहता है. समय के साथ बदलते माहौल में हमें स्वयं को बदलना होगा साथ ही हमें यह ठीक से समझना होगा कि लैंगिक भूमिका व्यक्तिगत पसंदगी व परिवार के पात्रों के मध्य सामंजस्य व समझ से ही परिभाषित हो. हमें समझना ही होगा कि लैंगिक भूमिकाओं को अब वो पीढ़ीगत, पुरातन व पारंपरिक अपेक्षाओं से नहीं अपितु आधुनिक जीवनशैली के साथ समय की मांग के अनुरूप निर्वहन करना होगा ताकि हम हमारी भावी पीढ़ीयों को अविवादित सशक्त पारिवारिक-सामाजिक आधार प्रदान कर सकें जिसके वे अधिकारी हैं.

बदलते माहौल मे परिवार एवं समाज का अस्तित्व दाव पर लगा हुआ है इस वास्तविकता से हम सभी भलीभाँति परिचित हैं. ऐसे अनेक अनेक सामाजिक मुद्दे हैं जो अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं व जिन पर त्वरित रूप से लक्ष्य करना अनिवार्य है उनमे बदलती पारिवारिक लैंगिक भूमिकांए भी एक है. किन्तु इस विषय की गंभीरता को समझ न पाना या समझने के इच्छा शक्ति न रखना ही परिवार मे विघटन तथा अव्यवस्थाओं का कारण बन रहा है. आधुनिक युग में बन रहे नए पारिवारिक एवं सामाजिक समीकरणों को समझने व उनसे अनुकूल होने का समय अब पक चुका है. इन परिवर्तनों को आत्मसात करना ही परिवार व समाज के हित में है.

प्रिय आत्मजन्,

आप सभी समाजजन् को महत्वपूर्ण एवं सामयिक जानकारियां प्रदान करने, सामाजिक वैचारिकी पर पठनीय सामग्री उपलब्ध कराने तथा नित नए परिवर्तनों से प्रभावित हो रही हमारी जीवनशैली, २१ वीं शताब्दी में समाजजन् के समक्ष चुनौतियाँ, युवा वर्ग की समस्याएँ व उनके शिक्षा व व्यापार जैसे मुद्दों पर आपसे नियमित वार्तालाप व विचारों के परस्पर आदान प्रदान के उद्देश्य से "भारतीय जैन संगठन समाचार" मासिक पत्रिका का सतरंगी प्रकाशन प्रारम्भ किया है.

स्थाई सतम्भ "पाठक की कलम से" हेतु प्रत्येक अंक में स्थान सुरक्षित रहेगा. इस अंक में प्रकाशित लेख, समाचारों व जानकारियों पर अपनी टिप्पणी, प्रतिक्रिया, प्रतिभाव तथा इस पत्रिका को अधिक समाजपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव आदि प्रकाशन हेतु अधिकतम ८ वाक्यों में प्रेषित करने की प्रार्थना है.

हमें विश्वास है कि इस समाचार पत्रिका के माध्यम से समाजजन् व भारतीय जैन संगठन, समाज को नयी व योग्य दिशा देने का रचनात्मक प्रयास कर सकेंगे.

प्रफुल्ल पारख
संपादक

जैन समाज का अस्तित्व खतरे मे

जैन समाज में वैवाहिक रिश्तें तय करने की पारंपारिक प्रक्रिया इस दौर में संदर्भहीन हो चली है, जिसके चलते समाज में रिश्ते तय होने में मुश्किले आ रही हैं, सगाईयां टूट रही हैं, पारिवारिक मतभेद बढ़ रहे हैं, तलाक के प्रकरण में वृद्धि हो रही है. इन सब कारणों से जैन समाज का अस्तित्व खतरें में है अत: विवाह तय करने की नई एवं कारगर प्रक्रिया के बारे में सोचना अत्यधिक आवश्यक हो गया है. इस संबंध में भारतीय जैन संगठन के संस्थापक आ. शांतिलालजी मुथ्था द्वारा विवाह तय करने की पद्धतियों में बदलाव लाने की प्रस्तुत नवीन विचारधारा का समाज द्वारा स्वागत किया जा रहा है. बदलते परिवेश में विवाह योग्य बेटे-बेटियों के रिश्ते तय करने में परिवारजन् को जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ता है उसका व्यावहारिक समाधान आ. मुथ्थाजी द्वारा प्रस्तुत विचारधारा में समाहित है. इस विषय पर समाजजन् को अवगत व जाग्रत करने हेतु भा.जै.सं. के विशेष वक्ता सर्वश्री सुदर्शन जैन, महेश कोठारी, राजेन्द्र लुंकड, संजय सिंघी, अमर गांधी एवं रजनीश जैन विभिन्न नगरों एवं शहरों में समाजजन् को संबोधित करेंगे.

पुनर्विवाह परिचय सम्मेलन इंदौर व नागपुर में सम्पन्न

जैन विधवा, विधुर, परित्यक्त आदि प्रत्याशियों हेतु परिचय सम्मेलनों का आयोजन इंदौर में १५ फरवरी व नागपुर में २२ फरवरी, १५ को क्रमश: भा.जै.सं. की मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र राज्य इकाइयों द्वारा आयोजित हुए. इंदौर सम्मेलन में ५३% तलाकशुदा, ३० %विधवा, १५ %विधुर आदि कुल ४२५ प्रत्याशियों ने भाग लिया जिसमें ५४ महिला व १५१ पुरूष प्रत्याशी थे. राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख दोनों ही सम्मेलनों में उपस्थित रहें. उन्होंने प्रत्याशियों से साक्षात्कार किया तथा पारिवारिक-सामाजिक समस्याओं व विशेषकर विवाह से संबंधित अनुभव की जा रही परेशानियों पर विस्तृत चर्चा की तथा उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया. भा.जै.सं. के परिचय सम्मेलन राष्ट्रीय प्रभारी श्री अनिल रांका, इंदौर सम्मेलन के मुख्य संयोजक डॉ. शरद दोषी व श्री वीरेंद्र नाहर, नागपुर सम्मेलन के संयोजक श्री रमेश कोचर के अतिरिक्त श्री वीरेंद्र कुमार जैन व श्रीमती हेमलता अजमेरा इंदौर व रजनीश जैन, नागपुर तथा महेश कोठारी गोंदिया के अथक परिश्रम से सफल आयोजन संभव हुआ.



अल्पसंख्यक लाभों पर विभिन्न राज्यों में कार्यशालाओं का आयोजन

भा.जै.सं. ने अल्पसंख्यक लाभों पर जनजाग्रति अभियान चलाने हेतु विशेष रूप से प्रशिक्षित ३० प्रशिक्षकों को तैयार किया है. जनवरी व फरवरी माह में महाराष्ट्र के ३४, मध्यप्रदेश के १६, उत्तरप्रदेश के ८ व गुजरात के १ नगरो/शहरों में कार्यशालाएं भा.जै.सं. की राज्य व स्थानीय इकाइयों के द्वारा आयोजित की गयी. प्रशिक्षक डॉ. संजय आंचलिया, सर्वश्री समीप इंदाने, कुशल बलडोटा, अनंत जैन, किशोर देशरडा, महावीर श्रीश्रीमाल, बालासाहेब पाटिल, डॉ. विमल जैन, नितीन जैन, सुरेश शाह, श्रीमती शाशा जैन, डॉ. सोनल मेहता, सुश्री आदिती साकलेचा एवं हर्षिता नाहर ने इन कार्यशालाओं मे समाजजन को अल्पसंख्यकता का अर्थ एवं महत्व से अवगत करवाते हुए सरकारी योजनाओं के तहत समाज के स्त्री, पुरूषों विद्यार्थीनिओं व व्यापारी वर्ग को मिलने वाले विविध लाभों पर विस्तृत रूप से प्रकाश ड़ाला व समाजजन के प्रश्न का समाधान प्रस्तुत किया.
भारतीय जैन संगठन के अल्पसंख्यक लाभ जनजाग्रति अभियान के राष्ट्रीय प्रभारी व उपराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. सुर्दशन जैन ने उत्तर प्रदेश में अल्पसंख्यक लाभों पर जनजाग्रति अभियान के शुभारंभ ८नगरों /शहरों में कार्यशालाओं को संबोधित किया.

तामिलनाडू राज्य कार्यकारिणी एवं पदाधिकारी सभा सम्पन्न

भा.जै.सं. तमिलनाडू राज्य कार्यकारिणी एवं पदाधिकारी सभा का आयोजन दिनांक १५ दिसंबर, २०१४ को चेन्नई में हुआ. भा.जै.सं. तामिलनाडू के राज्य अध्यक्ष श्री ग्यानचंद आंचलिया ने सभी का स्वागत किया व राज्य सचिव श्री महावीर परमार ने सभा का संचालन किया. जिला पदाधिकारियों के अतिरिक्त सर्वश्री कैलासमल दुग्गड़, सुधीर सुराणा, व राजेंद्र लुंकड़ आदि उपस्थित रहे. भा.जै.सं. के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे युवती एवं युगल सशक्तिकरण, कॅरिअर गाईडेन्स, स्टुडन्ट असेसमेंट, परिचय सम्मेलन, अल्पसंख्यक के लाभ एवं बिझनेस डेव्हलपमेंट आदि के आयोजन विषय पर विस्तृत चर्चा कर योजना बनाई गई. उपस्थित पदाधिकारियों ने कार्यक्रमों को उनको क्षेत्रों में आयोजन करने हेतु जिम्मेदारी स्वीकारी.



परिचय सम्मेलन का इंटरनेट माध्यम से प्रसारण

परिचय सम्मेलन का इंटरनेट माध्यम से प्रसारण २१ दिसंबर, २०१४ को पुणे में उच्चशिक्षित प्रत्याशियों हेतु 'मल्टीनॅशनल प्रोफेशनल्स मॅट्रीमोनियल मीट' का आयोजन हुआ जिसमें १६९ प्रत्याशियों ने भाग लिया. इस कार्यक्रम का प्रसारण नासिक, कोल्हापुर, जलगाँव, उज्जैन, बैंगलोर, चेन्नई, हैदराबाद, जोधपुर एवं भीलवाड़ा में इंटरनेट के माध्यम से दि. २५ जनवरी, २०१५ को किया गया जिसका उद्देश्य जैन परिवारों को विवाह योग्य युवक-युवती प्रत्याशियों का बायॉडाटा उपलब्ध कराना था ताकि वे उनके बेटे-बेटीयों के विवाह के संबंध में उपलब्ध जानकारी का लाभ ले सकें.

भारतीय जैन संगठन की देश के उत्तर पूर्वीय राज्यों मे स्थापना के साथ गतिविधियों का शुभारंभ

भा.जै.सं. की राष्ट्रीय काउंसिल सदस्य व उत्तर पूर्वीय राज्यों के प्रभारी श्री. रजनीश जैन, नागपुर में १३ जनवरी, १४ जनवरी से प्रारंभ ४ दिवसीय यात्रा में गुवाहटी (आसाम) व दिमापुर (नागालेंड) का दौरा कर जैन समाज की सभाओं को संबोधित किया व भा.जै.सं. द्वारा संचालित कार्यक्रमों की आवश्यक्ता एवं महत्व पर प्रकाश डाला. दोनों ही शहरों भा.जै.सं.की स्थानीय इकाइयों का गठन श्री. रजनीश जैन की उपस्थिती में सम्पन्न हुआ. गुवाहटी व दिमापूर में इसी माह में युवती सशक्तिकरण कार्यशालाओं का आयोजन भी हुआ जिसमें क्रमश: मनीषा भंसाली, औरंगाबाद ने ६५ व दिलीप चोपड़ा, गोंदिया ने ५० युवतियों को प्रशिक्षण दिया.तिनसुकिया, जोरहट, डिब्रूगढ में समाजजन के साथ मीटींग की गई. श्री. मनोज सेठिया एवं कपूरचंदजी पटनी का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ.





अल्पसंख्यक सूचनाएं, जानकारी एवं समाचार

जैन विद्यार्थीयों को मौलाना आज़ाद फॅलोशिप (शिक्षावृत्ति)

M.Phil. तथा Ph.D. कर रहे प्रत्याशियों को प्रतिवर्ष नवीन २० मौलाना आज़ाद फॅलोशिप (शिक्षावृत्ति) भारत सरकार द्वारा अल्पसंख्यक जैन समुदाय हेतु देना निर्धारित किया गया है. जूनियर व सीनियर अनुसंधानकर्ता (fellows) के लिए यह राशि न्यूनतम रू. २.५ लाख से महत्तम रू. ३.२५ लाख प्रतिवर्ष देय है. M.Phil. तथा Ph.D. कर रहे देशभर के जैन समाज के एसे प्रत्याशी जिन्हें विश्वविद्यालयी अनुदान प्राप्त नहीं हो रहा है, फॅलोशिप (शिक्षावृत्ति) हेतु पात्रता के अधीन आवेदन कर सकेंगे. एसे सभी अनुसंधानकर्ता योजना की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु हमसे सम्पर्क करें.

अल्पसंख्यक लाभों पर भारतीय जैन संगठन का जनजाग्रति अभियान

अल्पसंख्यक लाभों की सम्पूर्ण जानकारी समाजजन् को देने हेतु भारतीय जैन संगठन द्वारा विशेष जाग्रती अभियान प्रशिक्षित प्रशिक्षकों के माध्यम से सम्पूर्ण देश के जैन समाज हेतु चलाने की योजना है. जनवरी व फरवरी माह में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के अनेक नगरों एवं शहरों में जाग्रती अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. आपके नगर/शहर में आपकी पहल पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन समाजहित में आवश्यक है, अत: प्रार्थना है कि आयोजन संबंधी जानकारी प्राप्त करने हेतु भा.जै.सं. के राज्य अध्यक्ष या हमसे सम्पर्क करें.

जैन शिक्षण संस्थाओं हेतु भा. जै. सं.का विशेष कार्यक्रम

यह गर्व का विषय है कि जैन समाज पूरे देश में २,५०० से अधिक शिक्षण संस्थाओं का संचालन गत अनेक वर्षों से कर रहा है. अल्पसंख्यक समुदायों की ट्रस्टों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं को असीमित लाभ प्राप्त हैं. आपके राज्य या जिला में अल्पसंख्यक समुदायों के द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधकों एवं प्रधानाचार्यों हेतु एक दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से लाभ व लाभ प्राप्त करने के तरीकों पर विस्तृत जानकारी भा.जै.सं. के विशेषज्ञों द्वारा नि:शुल्क दी जाएगी. निवेदन है कि आपके क्षेत्र में उपरोक्त कार्यशाला के आयोजन हेतु हमसें संपर्क करें.

अल्पसंख्यक लाभों, योजनाओं की जानकारी,आवेदन के तरीकों, आपके प्रश्नों के समाधान पाने व पुस्तकें प्राप्त करने हेतु हमसे सम्पर्क करें



भारतीय जैन संगठन पुणे
at
helpminority@bjsindia.org
टेलीफोन नंबर
020-4120 0600, 4128 0011, 4128 0012, 4128 0013

अल्पसंख्यक लाभों पर भा. जै. सं. द्वारा प्रकाशित उपलब्ध पुस्तकें

जैन समाज के विद्यार्थी, महिला, व्यापारी, शिक्षण संस्थाओं, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं हेतु भारत सरकार के अल्पसंख्यक मंत्रालय की विविध योजनाओं की सम्पूर्ण जानकारी, नियम व आवेदन करने के तरीकों पर ६ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं जो हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध हैं. पुस्तकें प्राप्त करने हेतु हमसे सम्पर्क करने का अनुरोध है. पुस्तकें हमारी वेबसाईट www.bjsindia.org पर से भी नि:शुल्क डाऊनलोड की जा सकती हैं.

प्रशासनिक परीक्षाएं उत्तीर्ण करनेवाले जैन प्रत्याशियों को आर्थिक सहायता

जिन प्रत्याशियों ने संघ लोकसेवा आयोग या राज्य लोकसेवा आयोग की राजपत्रित या अराजपत्रित प्रशासनिक पदों हेतु निर्धारित परिक्षाएं उत्तीर्ण की हैं, एसे जैन समाज के सभी प्रत्याशी पात्रता के अधीन भारत सरकार द्वारा प्रदत्त वित्तीय अनुदान क्रमश: रू. ५०,०००/- एवं रू. २५,०००/- प्राप्त कर सकते हैं. अधिक जानकारी हेतु हमसे सम्पर्क करें.

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति हेतु अब आधार कार्ड आवश्यक

आगामी शैक्षणिक वर्ष २०१५-१६ से अल्पसंख्यक समुदायों के लिए भारत सरकार की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के तहत लाभ प्राप्त करने हेतु लाभार्थी विद्यार्थियों का आधार कार्ड आवश्यक होगा. विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से निवेदन है कि आपके नगर के संबंधित सरकारी विभाग से सम्पर्क कर यथाशीघ्र आधार कार्ड बनवाएं.

अब मिल सकेंगे जैन समाज को अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र

अनेक राज्यों में जैन समाज को प्रशासन द्वारा अल्पसंख्यक दर्जा प्रमाणपत्र अब तक जारी नहीं करने संबंधी गंभीर मामले प्रकाश में आए जिस हेतु विभिन्न संस्थाओं व व्यक्तियों ने केंद्र सरकार को शिकायत कर राज्य सरकारों को इस संबंध में आवश्यक निर्देश देने हेतु प्रार्थना की थी. श्रीमती नजमा हेपतुल्ला, मंत्री, अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर जैन समाज को अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र देने हेतु निर्देश दिया है.

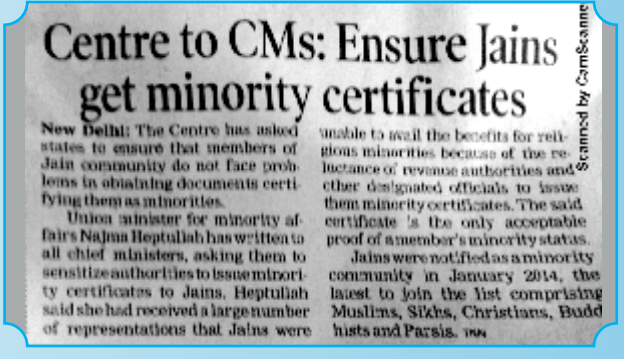

Centre to CMs: Ensure Jains get minority certificates

Scanned by CamScanner

New Delhi: The Centre has asked states to ensure that members of Jain community do not face problems in obtaining documents certifying them as minorities.

Union minister for minority affairs Najma Heptullah has written to all chief ministers, asking them to sensitize authorities to issue minority certificates to Jains. Heptullah said she had received a large number of representations that Jains were unable to avail the benefits for religious minorities because of the reluctance of revenue authorities and other designated officials to issue them minority certificates. The said certificate is the only acceptable proof of a member's minority status.

Jains were notified as a minority community in January 2014, the latest to join the list comprising Muslims, Sikhs, Christians, Buddhists and Parsis. TNN

IGNITING BUSINESS DEVELOPMENT ▶ iBuD



Atul Chordia | V. Bhansali | Bhavarlal Jain | Mrs.Mazumdar | Chenraj Jain | Arun Jain | L. Adaikalam

सफल युवा उद्यमी बनाने हेतु भारतीय जैन संगठन का रचनात्मक प्रयास

व्यापारिक एवं वाणिज्यिक वैश्विकरण व तीव्र गति से बदलते सामाजिक समीकरणों के कारण व्यवसाय के तरीके ही नहीं अपितु परिभाषाएं भी बदल गई हैं. वर्षों से स्थापित व अनुवांशिक तरीकों से चल रहे व्यापार को अब जीवंत रखना कठिन हो गया है जिससे जैन समाज भी अछूता नहीं रहा. परिवर्तनशील परिस्थितियों में समय की आवश्यकता के अनुरूप मानव जीवन को स्पर्श कर रही उन सभी विधाओं में समयानुकूल सामंजस्य आवश्यक है जिनमें व्यवसाय भी एक है.

यह नितांत आवश्यक है कि जैन समाज के युवा वर्ग को दिशा निर्देशित किया जाए ताकि वे सफलता से व्यापार का संचालन कर सकें. युवा वर्ग को उद्यमी बनाने हेतु उन्हें प्रेरित करने की नितांत आवश्यकता है. अत: भा.जै.सं. जैन समाज के युवा उद्यमियों हेतु विशेष I-Bud (Igniting Business Development) नामक ७ दिवसीय (१२ से १८ अप्रैल २०१५ तक) प्रवासीय कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है जिसमें देशभर से जैन समाज के ४० युवा उद्यमियों को देश के मुख्य ७ शहरों के प्रवास के साथ उन महान उद्यमियों से वार्तालाप व विचार-विमर्श का अवसर प्राप्त होगा जिन्होंने व्यापारिक साम्राज्य खड़े कर कीर्तिमान स्थापित किये हैं. पुणे, मुंबई, जलगाँव, अहमदाबाद, इंदौर, बैंगलोर व चेन्नई के इस प्रवास में सर्वश्री अतुल चोरड़िया, वल्लभ भन्साली, भँवरलाल जैन, चेनराज जैन, अरूण जैन, लॉरेन्स एवं श्रीमती किरण शॉ मजुमदार के अतिरिक्त बिजनेस मॅनेजमेंट स्कूल व I.I.M. जैसी संस्थाओं के निदेशकों से मिलने व उनसे प्रशिक्षण प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त होगा.

Book-Post

To,

BJS
Bharatiya Jain Sangathan
Ground Floor, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel.: 020 4128 0011, 4128 0012, 4128 0013
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org
Facebook : www.facebook.com/BJSIndia